UP Board Class 12 Hindi General 2026 (Set 302 BL) Question Paper with Solutions

collegedunia

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). भारतेन्दु युगीन लेखक हैं:

(A) रायकृष्ण दास

(B) चतुरसेन शास्त्री

(C) किशोरीलाल गोस्वामी

(D) वियोगी हरि

Correct Answer: (C) किशोरीलाल गोस्वामी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य का लगभग 1868 से 1900 ई. तक का काल है। इस काल के गद्य और उपन्यास लेखकों में किशोरीलाल गोस्वामी का नाम प्रमुख है।

चरण 2: सही विकल्प की पहचान:
किशोरीलाल गोस्वामी (1865-1932) काशी के निवासी थे। उन्होंने साठ से अधिक उपन्यास लिखे, जैसे 'तारा', 'चपला', 'लवंगलता'। उनकी पहली कहानी 'इन्दुमती' 1900 ई. में छपी। इसलिए वे भारतेन्दु युग के लेखक माने जाते हैं।

चरण 3: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(A) रायकृष्ण दास: ये प्रसाद युग के लेखक हैं, इनकी रचना 'साधना' है।
(B) चतुरसेन शास्त्री: ये बाद के युग के उपन्यासकार हैं, 'वैशाली की नगरवधू' इनकी रचना है।
(D) वियोगी हरि: ये भी बाद के युग के कवि और लेखक हैं, 'वीर सतसई' इनकी रचना है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) किशोरीलाल गोस्वामी है।

1(b). हिन्दी का पहला पत्र है:

(A) 'प्रजा हितैषी'

(B) 'उदन्त मार्तण्ड'

(C) 'बनारस अखबार'

(D) 'बंगदूत'

Correct Answer: (B) 'उदन्त मार्तण्ड'

Solution:

चरण 1: तथ्य:
हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है। यह साप्ताहिक पत्र 30 मई 1826 ई. को कलकत्ता से निकला। इसके संपादक पं. जुगल किशोर शुक्ल थे। आर्थिक कठिनाइयों के कारण लगभग डेढ़ वर्ष में यह बंद हो गया। इसी कारण हिन्दी पत्रकारिता दिवस 30 मई को मनाया जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(A) 'प्रजा हितैषी' बहुत बाद का हिन्दी पत्र है।
(C) 'बनारस अखबार' 1845 ई. में काशी से निकला, राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द से जुड़ा पत्र है।

(D) ‘बंगदूत’ 1829 ई. में राजा राममोहन राय के प्रयास से निकला। यह कई भाषाओं का पत्र था।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) ‘उदन्त मार्तण्ड’ है।

1(c). रामचन्द्र शुक्ल लिखित कहानी है:

(A) 'ग्राम'

(B) 'दुलाईवाली'

(C) 'इन्दुमती'

(D) 'ग्यारह वर्ष का समय'

Correct Answer: (D) 'ग्यारह वर्ष का समय'

Solution:

चरण 1: लेखक और रचना:
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक और निबन्धकार हैं। उन्होंने कुछ कहानियाँ भी लिखीं। उनकी कहानी ‘ग्यारह वर्ष का समय’ 1903 ई. में ‘सरस्वती’ पत्रिका में छपी। इसे हिन्दी की आरंभिक मौलिक कहानियों में गिना जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों के लेखक:
(A) ‘ग्राम’: यह जयशंकर प्रसाद की कहानी है।
(B) ‘दुलाईवाली’: यह बंग महिला (राजेन्द्रबाला घोष) की कहानी है।
(C) ‘इन्दुमती’: यह किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) ‘ग्यारह वर्ष का समय’ है।

1(d). 'कालिदास की निरंकुशता' रचना की विधा है:

(A) आलोचना साहित्य

(B) संस्मरण

(C) आत्मकथा

(D) जीवनी

Correct Answer: (A) आलोचना साहित्य

Solution:

चरण 1: रचना का परिचय:
'कालिदास की निरंकुशता' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचना है। इसमें उन्होंने कवि कालिदास की कविता में आए व्याकरण, अर्थ और वर्णन के दोषों की जाँच की है। इसलिए यह आलोचनात्मक लेखन है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) आलोचना साहित्य: कृति की गुण-दोष के आधार पर परख होती है। यह रचना यही करती है, इसलिए सही है।
(B) संस्मरण: इसमें लेखक अपनी स्मृति के किसी व्यक्ति या घटना का वर्णन करता है। यहाँ ऐसा नहीं है।
(C) आत्मकथा: इसमें लेखक अपने जीवन की कथा कहता है। यह रचना ऐसी नहीं है।
(D) जीवनी: इसमें किसी अन्य व्यक्ति का जीवन-वृत्त होता है। यह भी सही नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) आलोचना साहित्य है।

1(e). 'प्रेमसागर' के लेखक हैं:

(A) सदल मिश्र

(B) रामप्रसाद निरंजनी

(C) लल्लू लाल

(D) सदासुख लाल

Correct Answer: (C) लल्लू लाल

Solution:

चरण 1: तथ्य:
'प्रेमसागर' के लेखक लल्लू लाल (लल्लूजी लाल) हैं। यह ग्रन्थ श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध की कथा पर आधारित है और खड़ी बोली गद्य में लिखा गया है। इसकी रचना कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज में डॉ. जॉन गिलक्रिस्ट की प्रेरणा से हुई।

चरण 2: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(A) सदल मिश्र की प्रसिद्ध रचना 'नासिकेतोपाख्यान' है।
(B) रामप्रसाद निरंजनी की रचना 'भाषायोगवासिष्ठ' है।
(D) सदासुख लाल की रचना 'सुखसागर' है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) लल्लू लाल है।

2(a). 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' यह कथन है:

(A) महावीर प्रसाद द्विवेदी का

(B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र का

(C) प्रेमघन का

(D) प्रतापनारायण मिश्र का

Correct Answer: (B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र का

Solution:

चरण 1: पंक्ति का स्रोत:
पूरा दोहा है: 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥' यह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रसिद्ध कथन है।

चरण 2: भाव:
अपनी भाषा की उन्नति ही सब प्रकार की उन्नति की जड़ है। अपनी भाषा का ज्ञान न हो तो हृदय की पीड़ा दूर नहीं होती।

चरण 3: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(A) महावीर प्रसाद द्विवेदी: ये भाषा-सुधार के लिए जाने जाते हैं, पर यह पंक्ति उनकी नहीं है।
(C) प्रेमघन: ये भारतेन्दु मंडल के लेखक हैं। यह दोहा उनका नहीं है।
(D) प्रतापनारायण मिश्र: ये भी भारतेन्दु मंडल के हैं, पर यह दोहा उनका नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र का है।

2(b). 'त्रिपथगा' काव्यकृति के रचनाकार हैं:

(A) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(B) महादेवी वर्मा

(C) मैथिलीशरण गुप्त

(D) जयशंकर प्रसाद

Correct Answer: (C) मैथिलीशरण गुप्त

Solution:

चरण 1: रचना और रचनाकार:
‘त्रिपथगा’ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकृति है। इसमें महाभारत की कथा पर आधारित उनके तीन खण्डकाव्य ‘वन-वैभव’, ‘वकसंहार’ और ‘सैरन्ध्री’ संकलित हैं। ‘त्रिपथगा’ का अर्थ भी तीन मार्गों पर चलने वाली, यानी गंगा है।

चरण 2: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(A) हरिऔध की प्रसिद्ध रचनाएँ ‘प्रियप्रवास’ और ‘वैदेही वनवास’ हैं।
(B) महादेवी वर्मा की रचनाएँ ‘नीहार’, ‘नीरजा’, ‘दीपशिखा’ हैं।
(D) जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ ‘कामायनी’, ‘आँसू’, ‘लहर’ हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) मैथिलीशरण गुप्त है।

2(c). सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है:

(A) 'ग्राम्या'

(B) 'अनामिका'

(C) 'कानन-कुसुम'

(D) 'विष्णुप्रिया'

Correct Answer: (A) 'ग्राम्या'

Solution:

चरण 1: तथ्य:
‘ग्राम्या’ सुमित्रानन्दन पन्त का काव्य-संग्रह है। इसमें गाँव के जीवन और किसानों की दशा के चित्र हैं। इसमें पन्त जी का झुकाव प्रगतिवाद की ओर दिखता है।

चरण 2: अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:
(B) ‘अनामिका’ सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ की रचना है।
(C) ‘कानन-कुसुम’ जयशंकर प्रसाद की रचना है।

(D) 'विष्णुप्रिया' मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) 'ग्राम्या' है।

2(d). 'सप्तक' के कवियों को 'राहों का अन्वेषी' कथन है:

(A) गिरिजाकुमार माथुर का

(B) भारतभूषण अग्रवाल का

(C) रामविलास शर्मा का

(D) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का

Correct Answer: (D) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि 'सप्तक' के कवियों को 'राहों का अन्वेषी' किसने कहा। 'सप्तक' का अर्थ है तारसप्तक, दूसरा सप्तक आदि काव्य-संकलन, जो प्रयोगवाद के आधार-ग्रन्थ हैं।

चरण 2: तथ्य:
'तारसप्तक' (सन् 1943) का सम्पादन सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने किया था।
उसकी भूमिका में अज्ञेय ने लिखा कि इन कवियों में कोई एक वाद या एक स्कूल नहीं है। ये कवि राही नहीं, राहों के अन्वेषी हैं, अर्थात् नई राहें खोजने वाले हैं।
इसी कथन के कारण प्रयोगवादी कवि 'राहों के अन्वेषी' कहे जाते हैं।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) गिरिजाकुमार माथुर: ये तारसप्तक के एक कवि हैं, सम्पादक या इस कथन के कहने वाले नहीं।

(B) भारतभूषण अग्रवाल: ये भी तारसप्तक के कवि हैं, कथन इनका नहीं है।
(C) रामविलास शर्मा: ये भी तारसप्तक के कवि हैं, पर यह कथन इनका नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का।

2(e). जयशंकर प्रसाद की कृति नहीं है:

(A) 'झंकार'

(B) 'झरना'

(C) 'आँसू'

(D) 'स्कंदगुप्त'

Correct Answer: (A) 'झंकार'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
हमें वह रचना छाँटनी है जो जयशंकर प्रसाद की नहीं है। इसलिए चारों विकल्पों के रचनाकार का मिलान करना होगा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) 'झंकार': यह मैथिलीशरण गुप्त का काव्य-संग्रह है (सन् 1929)। यह प्रसाद की रचना नहीं है।
(B) 'झरना': प्रसाद का काव्य-संग्रह है, जिसमें छायावादी स्वर की शुरुआत दिखती है।
(C) 'आँसू': प्रसाद का वेदना-प्रधान गीतिकाव्य है।
(D) 'स्कंदगुप्त': प्रसाद का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है।

चरण 3: प्रसाद की अन्य कृतियाँ:
काव्य: कामायनी, लहर, कानन-कुसुम, प्रेम-पथिक, चित्राधार। नाटक: चन्द्रगुप्त,

ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) 'झंकार', क्योंकि यह मैथिलीशरण गुप्त की कृति है।

3(i). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए! हमारा यह ध्येय है की राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पाठ और लेखक:
यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'गद्य गरिमा' के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

चरण 2: सन्दर्भ:
यह निबन्ध लेखक के निबन्ध-संग्रह 'पृथिवीपुत्र' में संकलित है। इस अंश में लेखक बताते हैं कि राष्ट्र के निर्माण के लिए पृथ्वी, आकाश और सागर की सम्पदा को जानना जरूरी है। वे विज्ञान और परिश्रम से राष्ट्र का भौतिक स्वरूप सँवारने की प्रेरणा देते हैं।

अंतिम उत्तर:
सन्दर्भ: पाठ 'राष्ट्र का स्वरूप', लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल।

3(ii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए! हमारा यह ध्येय है की राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रसंग:
यह अंश 'राष्ट्र का स्वरूप' निबन्ध से है। लेखक यहाँ राष्ट्र की भौतिक उन्नति के लिए विज्ञान और उद्यम को मिलाने की बात कहते हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:
उद्यम: परिश्रम और प्रयत्न। ठाट: रचना, ढाँचा। अथक: जो थके नहीं। नित्य: प्रतिदिन।

चरण 3: व्याख्या:
लेखक कहते हैं कि केवल ज्ञान से राष्ट्र नहीं बनता और केवल मेहनत से भी नहीं। विज्ञान की जानकारी और उद्यम की शक्ति दोनों साथ हों, तभी राष्ट्र का भौतिक ढाँचा नए रूप में खड़ा होता है। यह काम प्रसन्न मन, उत्साह और बिना थके परिश्रम से रोज आगे बढ़ना चाहिए। तभी खेती, उद्योग, खनिज और सागर की सम्पदा का पूरा लाभ मिलेगा।

चरण 4: विशेष:
भाषा तत्सम शब्दों वाली शुद्ध खड़ी बोली है। शैली विचारात्मक और प्रेरणा देने वाली है।

निष्कर्ष:
राष्ट्र की भौतिक उन्नति विज्ञान और परिश्रम के मेल से ही सम्भव है।

3(iii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं।
विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए! हमारा यह ध्येय है की राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iii) राष्ट्रीय चेतना में भौतिक ज्ञान-विज्ञान के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
प्रश्न पूछता है कि राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भौतिक ज्ञान और विज्ञान क्यों जरूरी है।

चरण 2: उत्तर:
लेखक के अनुसार पृथ्वी, आकाश और सागर में अपार सामग्री और रत्न भरे हैं। इनके प्रति जागरूकता तभी आती है जब उनका वैज्ञानिक ज्ञान हो। भौतिक ज्ञान से राष्ट्र अपने साधनों को पहचानता है और उनका सही उपयोग करता है। इससे राष्ट्र में नई चेतना, जिज्ञासा और आत्मविश्वास जागता है। बिना विज्ञान के राष्ट्र सोया हुआ रहता है।

निष्कर्ष:
भौतिक ज्ञान-विज्ञान राष्ट्र को जगाता है और उसकी प्रगति का आधार बनता है।

3(iv). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए! हमारा यह ध्येय है की राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iv) लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था कब तक स्वीकार की है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश में संकेत:
लेखक कहते हैं कि 'राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं, तब तक हम सोए हुए के समान हैं'।

चरण 2: उत्तर:
लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था तब तक स्वीकार की है, जब तक नवयुवकों के मन में पृथ्वी, आकाश और सागर की सामग्री और रत्नों के प्रति जानने की इच्छा जाग्रत नहीं होती।

अंतिम उत्तर:
जिज्ञासा जागने तक ही राष्ट्र सोया हुआ माना गया है।

3(v). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सब के प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र नवयुवकों के हृदय में उन सब के प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए! हमारा यह ध्येय है की राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(v) विज्ञान और श्रम के संयोग से राष्ट्र प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: मूल भाव:
लेखक के अनुसार विज्ञान और उद्यम दोनों मिलकर राष्ट्र का भौतिक स्वरूप नए ढंग से खड़ा करते हैं।

चरण 2: उत्तर:
विज्ञान राष्ट्र को अपने साधनों की जानकारी और नई तकनीक देता है। श्रम उन साधनों को काम में बदलता है। जब दोनों मिलते हैं तो उत्पादन बढ़ता है और खोज को बल मिलता है। यह काम प्रसन्नता, उत्साह और थके बिना रोज करना चाहिए। जब राष्ट्र का हर हाथ इस काम में लगेगा, तब कोई खाली नहीं रहेगा और राष्ट्र तेजी से प्रगति करेगा।

निष्कर्ष:
विज्ञान और श्रम के संयोग से राष्ट्र सब ओर से उन्नत होता है।

OR

3(i). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अन्तिम महूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश 'अशोक के फूल' नामक निबन्ध से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। यह पाठ हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड में संकलित है।

चरण 2: अंश का परिचय:
यह निबन्ध का आरम्भिक अंश है। इसमें लेखक फूले हुए अशोक को देखकर अपने मन की उदासी का उल्लेख करते हैं। वे बताते हैं कि यह उदासी किस प्रकार की नहीं है और उसका असली कारण क्या हो सकता है।

अंतिम उत्तर:
पाठ: अशोक के फूल, लेखक: हजारीप्रसाद द्विवेदी।

3(ii). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अन्तिम महूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अशोक के फूल' नामक निबन्ध से ली गई हैं। इसके लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

चरण 2: प्रसंग:
खिले हुए अशोक को देखकर लेखक का मन उदास हो जाता है। वे यहाँ अपनी उदासी के संभावित कारणों में से एक कारण को नकारते हैं।

चरण 3: शब्दार्थ:
हतभाग्य: अभागा। रस: आनंद। दूरदर्शी: दूर तक देखने वाला। महूर्त (मुहूर्त): क्षण।

चरण 4: व्याख्या:
लेखक कहते हैं कि अशोक को देखकर उनका मन इस कारण उदास नहीं होता कि सुंदर वस्तुओं को अभागा मानने में उन्हें कोई विशेष आनंद मिलता है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं। वे बहुत दूर की बात देखने वाले होते हैं। सामने आई प्रत्येक वस्तु के जीवन के अंतिम क्षण तक का हिसाब वे पहले से लगा लेते हैं। लेखक कहते हैं कि उनकी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। वे तो सीधे फूल को देखकर उदास हो जाते हैं।

निष्कर्ष:
लेखक की उदासी स्वाभाविक भावुकता से पैदा हुई है, दूर की चिंता से नहीं।

3(iii). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अन्तिम महूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(iii) इस गद्यांश में लेखक ने स्वयं के विषय में क्या कहा है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
इस प्रश्न का उत्तर केवल गद्यांश से देना है। देखना है कि लेखक ने अपने बारे में कौन-कौन सी बातें कही हैं।

चरण 2: लेखक की स्वयं के विषय में बातें:
1. खिले हुए अशोक को देखकर उनका मन उदास हो जाता है।
2. यह उदासी इसलिए नहीं है कि उन्हें सुन्दर वस्तुओं को अभागा समझने में आनन्द

आता है।
3. वे दूरदर्शी नहीं हैं। उनकी दृष्टि किसी वस्तु के जीवन के अन्त तक नहीं पहुँचती।
4. उदासी का असली कारण अन्तर्यामी ही जानते होंगे, पर थोड़ा-सा अनुमान वे भी कर सकते हैं।

अंतिम उत्तर:
लेखक ने अपने को सरल, भावुक और कम दूर तक देखने वाला बताया है, जिसकी उदासी का कारण गहरा है।

3(iv). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अन्तिम महूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(iv) प्रस्तुत गद्यांश का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का विषय:
यह 'अशोक के फूल' निबन्ध का आरम्भ है। इसमें लेखक फूले हुए अशोक को देखकर अपनी उदासी की बात करते हैं।

चरण 2: उद्देश्य:
1. अपनी उदासी को दूसरों की निराशावादी सोच से अलग बताना।
2. पाठक के मन में जिज्ञासा जगाना कि सुन्दर अशोक को देखकर भी लेखक उदास क्यों हैं।
3. आगे के निबन्ध की भूमिका बाँधना, जिसमें अशोक की भारतीय संस्कृति में भूली-बिसरी महिमा का वर्णन है।

निष्कर्ष:
गद्यांश का उद्देश्य लेखक की भावुक मनःस्थिति को सरलता से प्रकट करना और निबन्ध के मुख्य विषय की ओर पाठक को ले जाना है।

3(v). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अन्तिम महूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(v) 'अन्तर्यामी और दूरदर्शी' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अन्तर्यामी:
अर्थ: सबके मन की बात जानने वाला, हृदय के भीतर की बात समझने वाला।
सामान्यतः यह शब्द ईश्वर के लिए प्रयोग होता है।
वाक्य: ईश्वर अन्तर्यामी है, वह सबके मन की बात जानता है।

चरण 2: दूरदर्शी:
अर्थ: दूर तक की बात सोचने वाला, भविष्य के परिणाम को पहले से देख लेने वाला।
वाक्य: दूरदर्शी व्यक्ति कोई भी काम सोच-समझकर करता है।

अंतिम उत्तर:
अन्तर्यामी: मन की बात जानने वाला (ईश्वर); दूरदर्शी: भविष्य की बात पहले सोचने वाला।

4(i). *पद्यांश:* यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शीर्षक:
इस पद्यांश का उचित शीर्षक है 'यही आता है इस मन में' (उर्मिला का विरह-गीत)। यह पंक्ति पूरे गीत की टेक है।

चरण 2: कवि का नाम:
इसके कवि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

चरण 3: स्रोत:
यह गीत उनके महाकाव्य 'साकेत' के नवम सर्ग से लिया गया है। इसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला अपने मन की बात कहती है।

अंतिम उत्तर:
शीर्षक: यही आता है इस मन में; कवि: मैथिलीशरण गुप्त।

4(ii). *पद्यांश:* यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: संदर्भ:
प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य 'साकेत' के नवम सर्ग के गीत 'यही आता है इस मन में' से ली गई हैं। यह उर्मिला की विरह-व्यथा का गीत है।

चरण 2: शब्दार्थ:
प्रिय = पति लक्ष्मण; व्रत = चौदह वर्ष की सेवा का संकल्प; विघ्न = बाधा; निकट = पास।

चरण 3: व्याख्या:
उर्मिला सोचती है कि वह भी वन में जाकर पति के पास रहे। पर वह जानती है कि लक्ष्मण ने राम और सीता की सेवा का व्रत लिया है। इसलिए वह चाहती है कि उसके कारण उस व्रत में कोई रुकावट न आए। वह पति के पास रहकर भी उनसे दूर रहना चाहती है, ताकि उन्हें उसकी याद में उलझना न पड़े।

चरण 4: विशेष:
इन पंक्तियों में उर्मिला का त्याग और पति के कर्तव्य का सम्मान झलकता है। 'निकट भी दूर' में विरोधाभास अलंकार है।

निष्कर्ष:
उर्मिला पति के पास रहना चाहती है, पर उनके व्रत की रक्षा के लिए दूरी भी स्वीकार करती है।

4(iii). *पद्यांश:* यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में कौनसा रस प्रयुक्त हुआ है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रस की पहचान:
इस पद्यांश में वियोग शृंगार रस (विप्रलम्भ शृंगार) है।

चरण 2: लक्षण:
जहाँ प्रेमी और प्रेमिका के बिछड़ने की पीड़ा का वर्णन हो, वहाँ वियोग शृंगार होता है। इसका स्थायी भाव रति है।

चरण 3: पद्यांश में प्रमाण:
आलम्बन लक्ष्मण हैं और आश्रय उर्मिला। वन में रहते पति की याद, 'व्यथा रहे' और 'रोदन' जैसे शब्द उद्दीपन और अनुभाव हैं। पति से मिलने की चाह और दूरी का दुख साफ दिखता है।

अंतिम उत्तर:
इस पद्यांश में वियोग शृंगार रस है।

4(iv). *पद्यांश:* यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।

(iv) 'रहूँ निकट भी दूर' से क्या अभिप्राय है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ:
'रहूँ निकट भी दूर' मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' के नवम सर्ग में उर्मिला की उक्ति है।

चरण 2: अभिप्राय:
उर्मिला चाहती है कि वह वन में लक्ष्मण के पास ही रहे, पर उनसे इतनी दूरी रखे कि उनके व्रत में बाधा न पड़े। यानी वह शरीर से पास होकर भी मिलने की आस से दूर रहेगी। लक्ष्मण भाई और भाभी की सेवा में लगे हैं, उन्हें अपनी पत्नी का मोह न सताए।

चरण 3: भाव:
इसमें उर्मिला का त्याग, संयम और पति के कर्तव्य के प्रति आदर प्रकट होता है।

अंतिम उत्तर:
पास रहकर भी पति के व्रत की रक्षा के लिए दूर रहना, यही इसका आशय है।

4(v). *पद्यांश:* यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।

(v) उपर्युक्त पद्यांश का काव्य सौन्दर्य लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: भाव-पक्ष:
इस गीत में उर्मिला की विरह-वेदना और पति के प्रति त्याग का सुंदर चित्रण है। उसके मन में वन जाने की इच्छा है, पर पति के व्रत का ध्यान उसे रोकता है। रस वियोग श्रृंगार है।

चरण 2: कला-पक्ष:
भाषा: सरल, मधुर और प्रवाहमयी खड़ीबोली, जिसमें तत्सम शब्द भी हैं।
शैली: गेय, भावपूर्ण गीति शैली; पंक्तियों में तुक है (मन, वन, रोदन)।
अलंकार: 'निकट भी दूर' और 'हर्ष डूबा हो रोदन में' में विरोधाभास; 'यही आता है इस मन में' की आवृत्ति से पुनरुक्ति का सौंदर्य।
गुण: माधुर्य। छन्द: गीत।

निष्कर्ष:
भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से यह अंश उर्मिला के चरित्र की ऊँचाई दिखाता है।

OR

4(i). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित गीत 'मैं नीर भरी दुख की बदली' से लिया गया है। यह गीत उनके काव्य-संग्रह 'नीरजा' में संकलित है और हमारी पाठ्यपुस्तक के काव्य-खण्ड में दिया गया है।

चरण 2: प्रसंग:
इन पंक्तियों में कवयित्री ने अपने जीवन को बरसने को तैयार बदली के समान बताया है। वे कहती हैं कि उनके मन में पीड़ा भरी हुई है, फिर भी उसी पीड़ा से संसार के लिए करुणा और प्रेम प्रकट होता है।

अंतिम उत्तर:
सन्दर्भ: पाठ 'मैं नीर भरी दुख की बदली', कवयित्री महादेवी वर्मा, संग्रह 'नीरजा'।

4(ii). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:
नीर = जल; बदली = छोटा बादल; स्पंदन = धड़कन, हलचल; चिर = सदा, बहुत समय से; निस्पंद = स्थिर, गतिहीन।

चरण 2: व्याख्या:
कवयित्री कहती हैं कि मैं जल से भरी हुई दुःख की बदली हूँ। जैसे बदली में पानी भरा रहता है, वैसे ही मेरे हृदय में पीड़ा भरी है। मेरे हृदय की हर धड़कन में सदा से एक ठहरी हुई, शांत वेदना बसी हुई है। बाहर से मैं हलचल में दिखती हूँ, पर भीतर स्थायी पीड़ा है। वही पीड़ा मेरे जीवन का आधार बन गई है। यहाँ विरोध का सुंदर भाव है, क्योंकि स्पंदन में निस्पंदता का बसना विरोधाभास है।

चरण 3: काव्य-सौन्दर्य:
भाषा खड़ी बोली है, जिसमें तत्सम शब्दों की प्रधानता है। 'नीर भरी दुःख की बदली' में रूपक अलंकार है। स्पंदन और निस्पंद के प्रयोग से विरोधाभास बना है। शैली गीतात्मक और भावपूर्ण है।

4(iii). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

(iii) 'नयनों में दीपक से जलते' में कौनसा अलंकार प्रयुक्त हुआ है? स्पष्ट करें।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अलंकार की पहचान:
'नयनों में दीपक से जलते' में **उपमा अलंकार** है।

चरण 2: उपमा के अंग:
उपमा में एक वस्तु की दूसरी वस्तु से समानता बताई जाती है। इसके चार अंग होते हैं: उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।
उपमेय: नयन (आँखें)
उपमान: दीपक
साधारण धर्म: जलना
वाचक शब्द: 'से'

चरण 3: कारण:
यहाँ आँखों की तुलना जलते हुए दीपक से की गई है। चारों अंग स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, इसलिए यह पूर्णोपमा है।

अंतिम उत्तर:
इस पंक्ति में उपमा अलंकार है।

4(iv). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

(iv) कवयित्री के निरन्तर रुदन का क्या कारण है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
पद्यांश में कवयित्री अपने आँसुओं और पीड़ा की बात कर रही हैं। हमें यह बताना है कि उनके निरन्तर रोने का कारण क्या है।

चरण 2: कारण:
महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना का मुख्य कारण अपने आराध्य, अर्थात् परमात्मा

(प्रियतम) से बिछुड़ने की पीड़ा है। यह विरह-वेदना उनके हृदय में सदा बसी रहती है, इसलिए उनकी आँखों से आँसू बहते रहते हैं।
साथ ही वे संसार के दुखी लोगों की पीड़ा को भी अपनी पीड़ा मानती हैं। इसी कारण उनका रुदन कभी रुकता नहीं।

चरण 3: पद्यांश से प्रमाण:
'स्पंदन में चिर निस्पंद बसा' से पता चलता है कि उनके हृदय की हर धड़कन में गहरी पीड़ा छिपी है।

अंतिम उत्तर:
कवयित्री के निरन्तर रुदन का कारण प्रियतम से बिछुड़ने की विरह-वेदना है।

4(v). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

(v) उपर्युक्त पद्यांश में कवयित्री ने स्वयं को क्या बताया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: उत्तर:
कवयित्री ने स्वयं को 'नीर भरी दुःख की बदली' बताया है।

चरण 2: अर्थ:
बदली जल से भरी होती है और वर्षा करके दूसरों को शीतलता देती है। इसी प्रकार कवयित्री का जीवन वेदना और आँसुओं से भरा है, फिर भी उनकी पीड़ा संसार के लिए करुणा और सुख का कारण बनती है।

निष्कर्ष:
कवयित्री ने अपने को दुःख से भरी हुई बदली कहा है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **वासुदेव शरण अग्रवाल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: जीवन-परिचय:
वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई. में मेरठ जनपद (उत्तर प्रदेश) के खेड़ा गाँव में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से इन्होंने पीएच.डी. और डी.लिट्. की उपाधियाँ लीं। ये भारतीय संस्कृति, पुरातत्त्व, कला और इतिहास के विद्वान थे। मथुरा संग्रहालय, राष्ट्रीय संग्रहालय और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जुड़े रहे।

चरण 2: साहित्यिक विशेषताएँ और रचनाएँ:
इनके निबंधों में भारतीय संस्कृति की गहरी समझ दिखती है। भाषा शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ और शैली विचारात्मक, गवेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक है।
निबंध-संग्रह: पृथिवीपुत्र, कल्पवृक्ष, कला और संस्कृति, भारत की मौलिक एकता, मातृभूमि।
शोध और आलोचना: पाणिनिकालीन भारतवर्ष, हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन, कादम्बरी: एक सांस्कृतिक अध्ययन, जायसी पद्मावत की संजीवनी व्याख्या।

निष्कर्ष:
अग्रवाल जी ने पुरातत्त्व और साहित्य को जोड़कर भारतीय संस्कृति की व्याख्या की, इसीलिए वे हिन्दी के सांस्कृतिक निबंधकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: जीवन-परिचय:
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 ई. को देवबन्द (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण ये जेल भी गए। ये पत्रकार, समाज-सेवी और श्रेष्ठ गद्यकार थे। 'नया जीवन' और 'विकास' पत्रों का संपादन किया। सन् 1990 ई. में इन्हें पद्मश्री मिली। इनका निधन 1995 ई. में हुआ।

चरण 2: साहित्यिक विशेषताएँ और रचनाएँ:
इन्होंने रेखाचित्र, संस्मरण, लघुकथा, निबंध और रिपोर्ताज लिखे। इनकी भाषा सरल और भावपूर्ण है, शैली में मार्मिक चित्रण, व्यंग्य और भावात्मकता है।
रेखाचित्र और संस्मरण: भूले-बिसरे चेहरे, माटी हो गई सोना, ज़िन्दगी मुस्कराई।
लघुकथा: आकाश के तारे धरती के फूल।
निबंध और अन्य: बाजे पायलिया के घुँघरू, दीप जले शंख बजे, क्षण बोले कण मुस्काए, महके आँगन चहके द्वार।

निष्कर्ष:
प्रभाकर जी ने हिन्दी को नया शिल्प दिया और रेखाचित्र तथा संस्मरण विधा को समृद्ध किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: जीवन-परिचय:
प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी का जन्म 10 अप्रैल 1919 ई. को आन्ध्र प्रदेश के बत्तुलपल्लि गाँव में हुआ। इनकी आरम्भिक शिक्षा तेलुगु और संस्कृत में हुई, फिर उच्च शिक्षा हिन्दी में प्राप्त की। ये आन्ध्र विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। इनका निधन 30 मार्च 2005 ई. को हुआ।

चरण 2: साहित्यिक विशेषताएँ और रचनाएँ:
ये विचारक, समालोचक और निबंधकार थे। हिन्दी और दक्षिण की भाषाओं के बीच मैत्री-भाव बढ़ाने के लिए इन्होंने तुलनात्मक अध्ययन किया। इनकी भाषा शुद्ध, गम्भीर और शैली विचारात्मक है।
प्रमुख कृतियाँ: साहित्य और समाज, मेरे विचार, वैचारिकी, शोध और बोध, हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य, लैंग्वेज प्राब्लम इन इण्डिया।

निष्कर्ष:
सुन्दर रेड्डी जी ने हिन्दी और तेलुगु साहित्य को निकट लाकर राष्ट्रीय एकता का कार्य किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् (तमिलनाडु) में हुआ। वे प्रसिद्ध मिसाइल वैज्ञानिक थे और 2002 से 2007 तक भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति रहे। उन्हें 'भारत रत्न' मिला। उनकी भाषा सरल, प्रेरक और आत्मीय है। युवाओं को राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा देना उनके लेखन का मुख्य स्वर है। प्रमुख रचनाएँ: अग्नि की उड़ान, इंडिया 2020, मेरी जीवन यात्रा, प्रज्वलित मन।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. उनका निधन 27 जुलाई 2015 को शिलांग में हुआ।
2. उन्हें पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990) और भारत रत्न (1997) से सम्मानित किया गया।
3. उनकी मूल पुस्तकें अंग्रेजी में हैं, हिन्दी में उनके अनुवाद पढ़े जाते हैं।
4. 'अग्नि की उड़ान' उनकी आत्मकथा है, जो अरुण तिवारी के सहयोग से लिखी गई।

निष्कर्ष:
कलाम वैज्ञानिक, शिक्षक और लेखक तीनों रूपों में युवाओं के प्रेरणा-स्रोत हैं।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को कसया (कुशीनगर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे प्रयोगवाद और नई कविता के प्रवर्तक कवि थे। उनके काव्य में बौद्धिकता, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य और नवीन प्रतीक-बिम्ब मिलते हैं। भाषा परिष्कृत और खड़ीबोली है। प्रमुख रचनाएँ: भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार; उपन्यास: शेखर एक जीवनी।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. उन्होंने 'तार सप्तक' का सम्पादन किया, जिससे प्रयोगवाद की शुरुआत मानी जाती है।
2. 'आँगन के पार द्वार' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964) और 'कितनी नावों में कितनी बार' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978) मिला।

3. अन्य गद्य-रचनाएँ: नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी, अरे यायावर रहेगा याद।
4. उनका निधन 4 अप्रैल 1987 को दिल्ली में हुआ।

निष्कर्ष:
अज्ञेय ने हिन्दी कविता को नई भाषा, नए प्रतीक और नई दृष्टि दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **महादेवी वर्मा**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं और आधुनिक मीरा कहलाती हैं। उनके काव्य में वेदना, करुणा और रहस्यवाद की प्रधानता है। भाषा संस्कृतनिष्ठ, कोमल और गीतात्मक है। प्रमुख रचनाएँ: नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा; गद्य: अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'यामा' पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982) मिला।
2. उन्हें पद्म भूषण (1956) और पद्म विभूषण (1988) से भी सम्मानित किया गया।
3. उन्होंने 'चाँद' पत्रिका का सम्पादन किया।
4. उनका निधन 11 सितम्बर 1987 को प्रयागराज में हुआ।

निष्कर्ष:
महादेवी वर्मा ने गीतों और संस्मरणों दोनों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **जय शंकर प्रसाद**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी में हुआ। वे छायावाद के प्रवर्तक और स्तम्भ माने जाते हैं। वे कवि, नाटककार, कहानीकार और उपन्यासकार थे। उनके काव्य में प्रकृति-प्रेम, सौन्दर्य, राष्ट्रीय चेतना और दार्शनिकता है। भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। प्रमुख रचनाएँ: कामायनी, आँसू, लहर, झरना; नाटक: स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी; उपन्यास: कंकाल, तितली।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'कामायनी' (1936) आधुनिक हिन्दी का श्रेष्ठ महाकाव्य है, इस पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला।
2. कहानी-संग्रह: छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल।
3. अन्य नाटक: अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री।
4. उनका निधन 15 नवम्बर 1937 को वाराणसी में हुआ।

निष्कर्ष:
प्रसाद जी की प्रतिभा ने हिन्दी की हर प्रमुख विधा को नई ऊँचाई दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल 1865 को निजामाबाद (आजमगढ़, उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने खड़ीबोली में पहला महाकाव्य लिखा। उनके काव्य में लोकमंगल, राष्ट्रप्रेम और मानवीय संवेदना है। प्रमुख रचनाएँ: प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, रसकलश, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे; उपन्यास: ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'प्रियप्रवास' (1914) में राधा-कृष्ण की कथा नए रूप में है, जिसमें राधा लोकसेविका के रूप में दिखती हैं।
2. उन्हें 'कवि सम्राट' कहा गया और वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे।
3. उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में काव्य-रचना की।
4. उनका निधन 16 मार्च 1947 को हुआ।

निष्कर्ष:
हरिऔध जी ने खड़ीबोली को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में बड़ा योगदान दिया।

6. 'पंचलाइट' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु की आंचलिक कहानी है। यह उनके संग्रह 'ठुमरी' में संकलित है। पंचलाइट का अर्थ है पेट्रोमेक्स, जिसे गाँव वाले पंचलैट कहते हैं।

चरण 2: कथासार:
1. महतो टोली के पंचों ने पन्द्रह दिनों तक दण्ड-जुर्माने के पैसे जोड़कर रामनवमी के मेले से पंचलाइट खरीदी। टोली के लोग उसे बड़े उत्साह और श्रद्धा से लाए।

2. समस्या यह हुई कि पूरे टोले में किसी को उसे जलाना नहीं आता था। दूसरे टोले वाले हँसी उड़ाने लगे।
3. गोधन को प्रेम और सिनेमा के गीत गाने के कारण बिरादरी से अलग कर रखा था। मुनरी ने चतुराई से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाली और कनेली ने पंचों तक यह बात पहुँचाई कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है।
4. पंचों ने मान-मनौवल के बाद गोधन को बुलाया। उसने पंचलाइट जला दी। टोले में उजाला फैल गया।

निष्कर्ष:
पंचायत ने गोधन का दोष माफ कर दिया और उसे फिर बिरादरी में मिला लिया। कहानी में ग्रामीण जीवन की सरलता और सामूहिक हित की विजय दिखाई गई है।

OR

'लाटी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'लाटी' शिवानी की मार्मिक कहानी है। इसकी नायिका बानो है, जिसका जीवन रोग, उपेक्षा और भाग्य की मार से बदल जाता है।

चरण 2: उद्देश्य:
1. कहानी का मुख्य उद्देश्य मध्यवर्गीय समाज में पति से दूर रहने वाली पत्नी की पीड़ा को दिखाना है।
2. लेखिका बताती हैं कि ससुराल में सास-ननद के ताने स्त्री को भीतर से तोड़ देते हैं। इस तरह नारी ही नारी के कष्ट का कारण बन जाती है।
3. क्षय रोग के प्रति समाज का भय और रोगी की उपेक्षा भी कहानी में दिखाई गई है। बानो को सैनेटोरियम में भी सहारा नहीं मिलता।
4. कप्तान जोशी का गहरा प्रेम भी बानो का दुख नहीं मिटा पाता।

निष्कर्ष:
कहानी पाठक को नारी की पीड़ा के प्रति संवेदनशील बनाती है और समाज से अपना दृष्टिकोण बदलने का आग्रह करती है।

7(a). 'मुक्ति यज्ञ' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं। यह उनके महाकाव्य 'लोकायतन' का एक अंश है। इसमें सन् 1921 से 1947 तक के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की मुख्य घटनाएँ हैं और नायक महात्मा गाँधी हैं।

चरण 2: कथानक:
1. कथा साबरमती आश्रम से आरम्भ होती है। अंग्रेजों के नमक-कर के विरोध में गाँधीजी दाण्डी यात्रा करते हैं और समुद्र-तट पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ते हैं।
2. इससे जनता जाग उठती है। अंग्रेज दमन करते हैं और हजारों लोग जेल जाते हैं।
3. गाँधीजी के आह्वान पर स्वदेशी को अपनाया जाता है और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार होता है।
4. साइमन कमीशन का विरोध और सन् 1942 का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन होता है।
5. सन् 1947 में देश स्वतन्त्र होता है, पर विभाजन से गाँधीजी दुखी होते हैं और साम्प्रदायिक एकता की अपील करते हैं।

निष्कर्ष:
देश की मुक्ति के लिए किया गया यह सत्य और अहिंसा का यज्ञ है, इसीलिए नाम 'मुक्तियज्ञ' सार्थक है।

OR

'मुक्ति यज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
सुमित्रानन्दन पन्त के 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। पूरी कथा उन्हीं के नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता-यज्ञ के चारों ओर घूमती है।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: वे बिना रक्तपात के स्वतन्त्रता पाना चाहते हैं और इन्हीं अस्त्रों से अंग्रेजी शासन की नींव हिला देते हैं।
2. दृढ़ संकल्पवाले: दाण्डी पहुँचकर नमक कानून तोड़ना उनके अटल निश्चय का प्रमाण है।
3. लोकनायक: उनके एक आह्वान पर लाखों नर-नारी सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हो जाते हैं।
4. समदर्शी और मानवतावादी: वे छुआछूत और जाति-भेद के विरोधी हैं तथा सबको समान मानते हैं।
5. साम्प्रदायिक एकता के समर्थक: देश-विभाजन के समय वे दुखी होकर प्रेम और भाईचारे की अपील करते हैं।

निष्कर्ष:
गाँधीजी युगद्रष्टा, त्यागी और सच्चे जननायक के रूप में चित्रित हैं।

7(b). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'आखेट' सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सर्ग का परिचय:
'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के रचयिता डॉ. शिवबालक शुक्ल हैं। इसकी कथा वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। 'आखेट' इसका तीसरा सर्ग है।

चरण 2: आखेट सर्ग की कथावस्तु:
1. सन्ध्या के समय अयोध्या-नरेश दशरथ के मन में आखेट की तीव्र इच्छा जागती है।
2. रात को वे स्वप्न में देखते हैं कि उनके बाण से हिरन का एक बच्चा मारा गया है।
3. वे इसे संकेत न मानकर रथ पर सवार होकर सरयू-तट के घने वन में जाते हैं और अँधेरे में छिपकर किसी पशु की प्रतीक्षा करते हैं।
4. उधर आश्रम में श्रवण के अन्धे माता-पिता को प्यास लगती है, और श्रवण जल लाने के लिए सरयू पर जाता है।
5. घड़ा डुबोने से हुई जल की ध्वनि को दशरथ किसी वन्य पशु की आवाज समझ लेते हैं और शब्दभेदी बाण छोड़ देते हैं। बाण श्रवण को लग जाता है।

निष्कर्ष:
यह सर्ग कथा का मोड़ है, क्योंकि यहीं से दशरथ के अपराध-बोध और आगे के शाप की घटना की भूमिका बनती है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर 'श्रवणकुमार' का चरित्र चित्रण कीजिए।
(अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
डॉ. शिवबालक शुक्ल के खण्डकाव्य 'श्रवणकुमार' के नायक श्रवणकुमार हैं। वे मातृ-पितृ-भक्ति के आदर्श माने गए हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. आदर्श पितृ-मातृ भक्त: वे अन्धे माता-पिता की सेवा में ही जीवन लगाते हैं। बाण लगने पर भी उन्हें अपनी पीड़ा से अधिक माता-पिता के भविष्य की चिन्ता होती है।
2. सत्यवादी: वे दशरथ को अपने जन्म की सच्ची बात बताते हैं कि पिता वैश्य और माता शूद्रा थीं।
3. क्षमाशील: अपने प्राण लेने वाले दशरथ के प्रति भी वे क्रोध नहीं रखते।
4. सरल और सन्तोषी: वे आश्रम का सादा जीवन जीते हैं और भोग-ऐश्वर्य की इच्छा नहीं करते।
5. धर्मपरायण: वे धर्म के गुणों को जीवन में अपनाते हैं।

निष्कर्ष:
श्रवणकुमार त्याग, सेवा, सत्य और क्षमा के उज्ज्वल आदर्श हैं।

7(c). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के पञ्चम सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सर्ग का परिचय:
'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का खण्डकाव्य है। इसके पंचम सर्ग का नाम 'माता की विनती' है। इसमें कुन्ती और कर्ण का मार्मिक संवाद है।

चरण 2: कथावस्तु:
महाभारत का युद्ध निश्चित हो जाने पर कुन्ती चिन्तित है कि रणभूमि में उसके ही दो पुत्र, कर्ण और अर्जुन, आमने-सामने होंगे।
इसी चिन्ता में वह कर्ण के पास जाती है और उसे उसके जन्म का रहस्य बताती है।
वह स्वीकार करती है कि लोक-लज्जा के कारण उसने कर्ण को जल में बहा दिया था।
कुन्ती कर्ण से दुर्योधन का साथ छोड़कर पाण्डवों के पक्ष में आने की प्रार्थना करती है।
कर्ण माँ की बात सुनकर दुखी होता है, पर अपने मित्र दुर्योधन के उपकार को नहीं

भूलता। वह कहता है कि संकट के समय साथ छोड़ना विश्वासघात होगा।
अन्त में कर्ण वचन देता है कि वह अर्जुन को छोड़कर किसी और पाण्डव को नहीं मारेगा। इस प्रकार युद्ध के बाद भी कुन्ती के पाँच पुत्र जीवित रहेंगे।
कुन्ती निराश होकर लौट जाती है।

निष्कर्ष:
पंचम सर्ग में कर्ण की मित्र-निष्ठा, दानशीलता और त्याग उभरकर सामने आते हैं। यही इस सर्ग की मुख्य कथा है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
कर्ण माँ को 'पाँच पुत्रों की माता' बने रहने का आशीर्वाद-सा आश्वासन देता है।
इस सर्ग से कर्ण का 'दानवीर' और 'मित्र-धर्म निभाने वाला' रूप स्पष्ट होता है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' के खण्डकाव्य 'रश्मिरथी' में सात सर्ग हैं। इसके नायक कर्ण हैं। कवि ने उन्हें महाभारत के पात्र से ऊपर उठाकर एक महामानव के रूप में दिखाया है।

चरण 2: कर्ण के चरित्र की विशेषताएँ:
1. महान योद्धा: रंगभूमि में कर्ण अपनी धनुर्विद्या से अर्जुन जैसे वीरों को चकित कर देता है।
2. स्वाभिमानी: सूतपुत्र कहकर अपमान होने पर भी वह अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखता है। जन्म नहीं, कर्म को वह महत्त्व देता है।
3. महादानी: इन्द्र छल से कवच और कुण्डल माँगते हैं। कर्ण सब समझकर भी उन्हें

दान कर देता है।
4. मित्र-निष्ठ: दुर्योधन ने उसे अंगदेश का राजा बनाया था। कृष्ण और कुन्ती के प्रलोभनों के बाद भी कर्ण उसका साथ नहीं छोड़ता।
5. सत्यवादी और गुरुभक्त: वह परशुराम से अपनी जाति छिपाता है, पर कष्ट सहकर गुरु की सेवा करता है।
6. मातृ-सम्मान: कुन्ती को वह वचन देता है कि अर्जुन के अतिरिक्त चारों पुत्र सुरक्षित रहेंगे।

निष्कर्ष:
कर्ण वीर, दानी, स्वाभिमानी और मित्र-धर्म का पालक है। उसका जीवन दुख से भरा है, फिर भी वह श्रेष्ठ मानव-मूल्यों का प्रतीक बनकर उभरता है।

7(d). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: खण्डकाव्य का परिचय:
'सत्य की जीत' के रचयिता द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी हैं। इसकी कथा महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है।

चरण 2: कथावस्तु:
दुर्योधन छल से पाण्डवों को द्यूत-क्रीड़ा के लिए बुलाता है। युधिष्ठिर एक-एक कर सब कुछ हारते हैं, फिर स्वयं को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगाकर हार जाते हैं।
दुःशासन द्रौपदी को केश पकड़कर भरी सभा में खींच लाता है। द्रौपदी निर्भय होकर पूछती है कि जो स्वयं को पहले हार चुका हो, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।
सभा में इस प्रश्न पर पक्ष और विपक्ष में तर्क होते हैं। दुःशासन बल को ही सत्य और

न्याय मानता है। विकर्ण जैसे सभासद द्रौपदी का समर्थन करते हैं।
द्रौपदी का तेजस्वी रूप और सत्य का बल देखकर दुःशासन का साहस टूट जाता है और वह चीरहरण में सफल नहीं होता।
अन्त में धृतराष्ट्र अन्याय स्वीकार करते हैं, पाण्डवों को मुक्त करते हैं और उनका राज्य लौटा देते हैं।

निष्कर्ष:
काव्य का सन्देश है कि अन्त में जीत सत्य, धर्म और न्याय की ही होती है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी का चरित्र चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी रचित 'सत्य की जीत' महाभारत के सभा-पर्व की द्यूत-सभा की घटना पर आधारित है। द्रौपदी इसकी नायिका है। कवि ने उसे असहाय नहीं, तेजस्वी और निडर नारी के रूप में दिखाया है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. स्वाभिमानी: दुःशासन उसे केश पकड़कर सभा में खींच लाता है, पर वह झुकती नहीं। वह इसे सारी नारी-जाति का अपमान मानती है।
2. निर्भीक और वीरांगना: वह दुःशासन को ललकारकर कहती है कि नारी का क्रोध देख।
3. तर्कशील: वह सभा से प्रश्न करती है कि स्वयं को हार चुके युधिष्ठिर को मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।
4. सत्य-न्याय की पक्षधर: वह अधर्म के सामने चुप नहीं रहती और सबको धर्म याद दिलाती है।
5. आत्मविश्वासी: चीर-हरण के प्रयास में भी वह सत्य के बल पर अडिग रहती है।

निष्कर्ष:
द्रौपदी आधुनिक जागरूक नारी की प्रतीक है। उसी की दृढ़ता से काव्य में सत्य की जीत होती है।

7(e). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' रचित 'त्यागपथी' के नायक सातवीं शताब्दी के सम्राट हर्षवर्धन हैं। उनके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ ये हैं।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:
1. आदर्श पुत्र और भाई: पिता की बीमारी की खबर पाते ही वे वन से लौट आते हैं। बहन राज्यश्री को संकट से बचाते हैं।
2. वीर योद्धा: वे लगभग छह वर्ष के युद्ध से अनेक राज्य जीतते हैं और शत्रुओं को पराजित करते हैं।
3. राष्ट्रीय एकता के पक्षधर: वे बिखरे हुए भारत को एक सूत्र में बाँधना चाहते हैं।
4. कुशल और प्रजावत्सल शासक: उनका शासन धर्म और प्रजा-कल्याण पर आधारित है।
5. महान त्यागी और दानी: प्रयाग के महोत्सव में वे अपना सारा कोष दान कर देते हैं। यही उन्हें 'त्यागपथी' बनाता है।

निष्कर्ष:
हर्षवर्धन वीरता, कर्तव्य-निष्ठा और त्याग का अनूठा उदाहरण हैं।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: परिचय:
'त्यागपथी' के कवि रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' हैं। इसमें सम्राट हर्षवर्धन के जीवन की घटनाएँ पाँच सर्गों में कही गई हैं।

चरण 2: सर्ग-क्रम से कथानक:
प्रथम सर्ग: वन में शिकार करते समय राजकुमार हर्ष को पिता की बीमारी का समाचार मिलता है। उपचार सफल नहीं होता। माता पति से पहले आत्मदाह कर लेती हैं और फिर पिता भी चल बसते हैं।
द्वितीय सर्ग: भाई राज्यवर्धन वैराग्य लेना चाहते हैं, पर बहन राज्यश्री की विपत्ति सुनकर युद्ध को जाते हैं। वे शत्रु को हराते हैं, किन्तु छल से मारे जाते हैं। हर्ष वन में राज्यश्री की प्राण-रक्षा करते हैं।
तृतीय सर्ग: हर्ष छह वर्षों की दिग्विजय से देश को एक करते हैं।
चतुर्थ सर्ग: राज्यश्री संन्यास लेना चाहती है। आचार्य दिवाकर उसे मानव-सेवा का मार्ग सुझाते हैं।
पंचम सर्ग: प्रयाग में हर्ष महोत्सव करके अपना सारा कोष दान कर देते हैं।

निष्कर्ष:
कथा का केन्द्र हर्षवर्धन का त्याग और लोक-कल्याण है।

7(f). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: परिचय:
'आलोकवृत्त' में आठ सर्ग हैं। इसमें महात्मा गाँधी के जन्म से भारत की स्वतन्त्रता तक की कथा है। इसके कवि गुलाब खण्डेलवाल हैं।

चरण 2: सर्ग-क्रम से कथासार:
1. प्रथम सर्ग: भारत के गौरवशाली अतीत और पराधीनता का वर्णन है। अन्त में पोरबन्दर में गाँधी जी का जन्म होता है।
2. द्वितीय सर्ग: बचपन, विवाह, पिता की मृत्यु और इंग्लैंड में शिक्षा का वर्णन है।
3. तृतीय सर्ग: दक्षिण अफ्रीका में अपमान के बाद सत्याग्रह का जन्म होता है।
4. चतुर्थ सर्ग: भारत आकर गाँधी जी चम्पारण आन्दोलन चलाते हैं।
5. पंचम सर्ग: असहयोग आन्दोलन और रचनात्मक कार्यों का वर्णन है।
6. षष्ठ सर्ग: नमक सत्याग्रह और डांडी यात्रा का वर्णन है।
7. सप्तम सर्ग: सन् 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन है।
8. अष्टम सर्ग: देश स्वतन्त्र होता है, पर साम्प्रदायिक दंगे गाँधी जी को दुखी करते हैं।

निष्कर्ष:
काव्य में सत्य, अहिंसा और मानवता के मूल्यों की विजय दिखाई गई है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
गुलाब खण्डेलवाल रचित 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। पूरी कथा उन्हीं के जन्म से लेकर देश की स्वतन्त्रता तक के जीवन के चारों ओर घूमती है। वे धीरोदात्त नायक के रूप में चित्रित हुए हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के उपासक: अफ्रीका में रेल के डिब्बे से उतारे जाने पर उन्होंने बदले की भावना नहीं अपनाई। उन्होंने अहिंसा के बल पर सत्याग्रह का मार्ग चुना।
2. सच्चे देशभक्त: चम्पारण, खेड़ा, असहयोग, दाण्डी यात्रा और भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने तन, मन, धन देश को अर्पित कर दिया।
3. आत्मशुद्धि के आग्रही: बचपन में चोरी से मांस खाने पर वे पछताए और पिता से क्षमा माँगी। यह उनकी सच्चाई दिखाता है।
4. साम्प्रदायिक एकता के समर्थक: हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने इक्कीस दिन का उपवास रखा।
5. ईश्वर में आस्थावान: वे साधन की पवित्रता को महत्त्व देते थे और अन्त में देश में शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष:
गाँधीजी सत्य, अहिंसा, त्याग और देशप्रेम की जीवित मूर्ति हैं। वे सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश-पुंज हैं, इसीलिए काव्य का नाम 'आलोकवृत्त' सार्थक है।

8(a). दिये गये संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते । इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति । ततः सुष्ठुक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से लिया गया है। इसमें संस्कृत भाषा को माता के समान पूज्य बताया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
अस्माभिः = हमारे द्वारा। मातृसमम् = माता के समान। सम्माननीया = आदर के योग्य। वन्दनीया = प्रणाम करने योग्य। अखण्डत्वम् = अखण्डता, एकता। सुरक्षितुम् = सुरक्षित करने के लिए। प्राचीनतमा = सबसे पुरानी। गीर्वाणभारती = देववाणी।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
यह भाषा हमारे द्वारा माता के समान सम्मान के योग्य और वन्दना के योग्य है। कारण यह है कि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता की रक्षा संस्कृत से ही की जा सकती है।
यह संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसलिए यह ठीक ही कहा गया है कि 'भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य भाषा देववाणी (संस्कृत) है।'

चरण 4: सार:
संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, हमारी संस्कृति की जड़ है। इसी से देश का गौरव और एकता सुरक्षित रहती है, इसलिए इसका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

OR

दिये गये संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्घे संन्यपतन् । नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् । हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'जातक-कथा' की 'नृत्यजातकम्' कथा से लिया गया है। इसमें पक्षियों के राजा हंसराज और उसकी पुत्री के स्वयंवर का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:
तस्यै = उसको (पुत्री को)। वरं दत्त्वा = वर देकर। हिमवति = हिमालय पर। शकुनिसङ्घे = पक्षियों के समूह में। संन्यपतत् = उतरा। नानाप्रकाराः = अनेक प्रकार के। महति पाषाणतले = बड़ी चट्टान की सतह पर। चित्तरुचितम् = मन को अच्छा लगने वाला। स्वामिकम् = पति। वृणुयात् = चुन ले। आदिदेश = आज्ञा दी।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
हंसराज उस पुत्री को (मनचाहा पति चुनने का) वर देकर हिमालय पर पक्षियों के समूह के बीच उतरा।
हंस, मोर आदि अनेक प्रकार के पक्षियों के झुंड आकर एक बड़ी चट्टान पर एकत्र हो गए।
हंसराज ने अपनी पुत्री को आदेश दिया कि तुम आकर अपने मन को भाने वाला पति चुन लो।

चरण 4: सार:
कथा में राजा अपनी पुत्री को अपना वर स्वयं चुनने की स्वतन्त्रता देता है। इसके लिए सभी पक्षी एक स्थान पर बुलाए जाते हैं।

8(b). दिये गये संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। इसमें बूँद-बूँद से घड़ा भरने के उदाहरण द्वारा निरन्तर प्रयास का महत्त्व बताया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
जलबिन्दुनिपातेन = पानी की बूँदों के गिरने से
क्रमशः = धीरे-धीरे, एक के बाद एक
पूर्यते = भरता है
घटः = घड़ा
सः = वह (यही)
हेतुः = कारण, साधन
सर्वविद्यानां = सभी विद्याओं का
धर्मस्य = धर्म का
धनस्य = धन का

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
पानी की एक-एक बूँद गिरने से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है। यही क्रम सभी विद्याओं की प्राप्ति का, धर्म के संचय का और धन के संग्रह का भी कारण है। अर्थात् विद्या, धर्म और धन थोड़ा-थोड़ा करके ही पाए जाते हैं।

चरण 4: भावार्थ:
कोई भी बड़ी सफलता एक दिन में नहीं मिलती। जिस प्रकार छोटी-छोटी बूँदें मिलकर खाली घड़े को भर देती हैं, उसी प्रकार प्रतिदिन का थोड़ा अध्ययन, थोड़ा पुण्य और थोड़ी बचत मनुष्य को ज्ञानी, धार्मिक और धनवान बना देती है। इसलिए हमें धैर्य के साथ लगातार परिश्रम करना चाहिए।

निष्कर्ष:
श्लोक का सार यह है कि निरन्तर अभ्यास और धैर्य ही विद्या, धर्म और धन की प्राप्ति का सही उपाय है।

OR

दिये गये संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि ।
क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः
न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक हमारी संस्कृत पाठ्य-पुस्तक के पाठ 'भोजस्यौदार्यम्' से लिया गया है। यह पाठ बल्लाल पण्डित रचित 'भोजप्रबन्ध' से संकलित है, जिसमें राजा भोज की उदारता और विद्वानों के आदर का वर्णन है। इसमें प्रातःकाल का सुन्दर चित्र खींचा गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
प्राची = पूर्व दिशा, पिङ्गा = पीली या सुनहरी, रसपतिः = पारा, कनकम् = सोना
गतच्छायः = कान्तिहीन, बुधजनः = विद्वान, ग्राम्यसदसि = गँवारों की सभा में
क्षीणाः = क्षीण या धुँधले हुए, अनुद्यमपराः = उद्योग न करने वाले
न राजन्ते = शोभा नहीं देते, द्रविणरहितानाम् = निर्धनों के

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
पूर्व दिशा पीली हो गई, जैसे सोने को पाकर पारा पीला हो जाता है। चन्द्रमा कान्तिहीन हो गया, जैसे गँवारों की सभा में पहुँचकर विद्वान् फीका पड़ जाता है। तारे क्षणभर में क्षीण हो गए, जैसे उद्यमहीन राजा शक्तिहीन हो जाते हैं। दीपक शोभा नहीं देते, जैसे निर्धन मनुष्यों के गुण नहीं चमकते।

चरण 4: भावार्थ:
प्रभात के समय पूर्व दिशा में पीली आभा फैली, चन्द्रमा और तारों की चमक घट गई और दीपकों का प्रकाश व्यर्थ हो गया। कवि ने प्रत्येक बात के लिए एक उचित उपमा दी है।

निष्कर्ष:
यह श्लोक उपमा अलंकार से भरा प्रभात-वर्णन है, जिसमें पहले पूर्व दिशा का, फिर चन्द्र, तारों और दीपों का बदलता रूप दिखाया गया है।

9. निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अपना ही राग अलापना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अर्थ:
मुहावरा: अपना ही राग अलापना।
अर्थ: दूसरों की बात न सुनकर केवल अपनी ही बात कहते रहना। इसमें व्यक्ति अपने विचार को ही सही मानता है और अड़ा रहता है।

चरण 2: वाक्य-प्रयोग:
बैठक में सबने अपने सुझाव दिए, पर प्रबंधक अपना ही राग अलापता रहा।

निष्कर्ष:
अपना ही राग अलापना का अर्थ है केवल अपनी बात पर अड़े रहना।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **लोहे के चने चबाना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अर्थ:
मुहावरा: लोहे के चने चबाना।

अर्थ: बहुत कठिन काम करना या अत्यन्त कठिनाई का सामना करना। जब कोई काम बहुत मेहनत और साहस से पूरा होता है, तब यह मुहावरा कहा जाता है।

चरण 2: वाक्य-प्रयोग:
भारतीय सैनिकों ने युद्ध में शत्रु को लोहे के चने चबवा दिए।

निष्कर्ष:
लोहे के चने चबाना का अर्थ है अत्यन्त कठिन कार्य करना।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **घी का लड्डू टेढ़ा भला**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अर्थ:
लोकोक्ति: घी का लड्डू टेढ़ा भला।
अर्थ: लाभदायक और अच्छी वस्तु किसी भी रूप में हो, वह अच्छी ही होती है। घी का लड्डू सीधा हो या टेढ़ा, स्वाद में कमी नहीं आती।

चरण 2: वाक्य-प्रयोग:
सुधीर को नौकरी दूर के शहर में मिली, पर उसने यह सोचकर स्वीकार कर ली कि घी का लड्डू टेढ़ा भला।

निष्कर्ष:
घी का लड्डू टेढ़ा भला: लाभ की वस्तु टेढ़ी-मेढ़ी होने पर भी अच्छी है।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **समरथ को नहिं दोष गोसाईं**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अर्थ:
लोकोक्ति: समरथ को नहिं दोष गोसाईं।
अर्थ: शक्तिशाली, धनी या प्रभावशाली व्यक्ति के गलत काम को भी कोई दोष नहीं कहता। दोष केवल कमजोर के हिस्से आता है। यह पंक्ति तुलसीदासकृत रामचरितमानस में आई है।

चरण 2: वाक्य-प्रयोग:
नेताजी के बेटे ने नियम तोड़ा, फिर भी पुलिस चुप रही, ठीक ही है कि समरथ को नहिं दोष गोसाईं।

निष्कर्ष:
समर्थ व्यक्ति के अपराध पर भी कोई उँगली नहीं उठाता।

10(i). *अपठित गद्यांश:* हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादायें टूट रही हैं। नैतिक मानदण्ड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति केन्द्रिकता बढ़ रही है। स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का भाव समझें:
लेखक कहता है कि हमारी सांस्कृतिक पहचान कमजोर हो रही है। लोग बड़े उद्देश्य छोड़कर क्षणिक सुख के पीछे भाग रहे हैं। मर्यादा और नैतिकता ढीली पड़ रही है, और स्वार्थ, भोग तथा उपभोक्तावाद बढ़ रहे हैं।

चरण 2: शीर्षक का चयन:
अच्छा शीर्षक छोटा होता है, पूरे गद्यांश का सार बताता है और विषय के अनुरूप होता है। यहाँ सबसे अधिक चिंता संस्कृति की पहचान के पतन की है।

अंतिम उत्तर:
उपयुक्त शीर्षक: 'सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास'।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादायें टूट रही हैं। नैतिक मानदण्ड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति केन्द्रिकता बढ़ रही है। स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है।

(ii) उपभोक्ता संस्कृति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द का अर्थ:
उपभोक्ता संस्कृति उस जीवन-शैली को कहते हैं जिसमें अधिक से अधिक वस्तुओं को खरीदना, भोगना और जमा करना ही सुख और सफलता का पैमाना मान लिया जाता है।

चरण 2: गद्यांश के अनुसार स्पष्टीकरण:
इस संस्कृति में व्यक्ति अपने सुख को सबसे ऊपर रखता है। भोग की इच्छाएँ आसमान छूने लगती हैं और समाज तथा परमार्थ की चिंता पीछे छूट जाती है।

चरण 3: प्रभाव:
लेखक के अनुसार यह संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है, क्योंकि इससे नैतिक मानदण्ड और मर्यादाएँ कमजोर पड़ रही हैं।

अंतिम उत्तर:
उपभोक्ता संस्कृति का अर्थ है वस्तुओं के भोग और उपयोग को ही जीवन का लक्ष्य मान लेने की प्रवृत्ति।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादायें टूट रही हैं। नैतिक मानदण्ड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति केन्द्रिकता बढ़ रही है। स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है।

(iii) हम लक्ष्य भ्रम से पीड़ित क्यों हैं?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
लक्ष्य भ्रम का अर्थ है यह तय न कर पाना कि जीवन का सही उद्देश्य क्या है। गद्यांश में इसके कारण बताए गए हैं।

चरण 2: कारण:
1. हम विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हट रहे हैं।
2. हम झूठी तुष्टि देने वाले तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं।
3. भोग की आकांक्षाएँ और स्वार्थ बढ़ने से बड़े आदर्श दिखाई देना बंद हो गए हैं।

निष्कर्ष:
हम बड़े और स्थायी उद्देश्य छोड़कर क्षणिक सुख के पीछे भाग रहे हैं, इसीलिए लक्ष्य भ्रम से पीड़ित हैं।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* जीवन की अनन्तता का प्रतीक ..... वह झरना उन अद्‌भुत ....., अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ कि जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सीमाओं से दूर बहती धारा में बहने लगा हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गईं। मन हुआ कि ऐसे ही अनन्त समय तक बहता रहूँ ..... सुनता रहूँ झरने की पुकार को।

(i) 'झरना' को किसका प्रतीक कहा गया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संबंधित पंक्ति:
गद्यांश की पहली पंक्ति में लिखा है: 'जीवन की अनन्तता का प्रतीक ..... वह झरना'। यहीं से उत्तर मिलता है।

चरण 2: भाव:
झरना लगातार बहता रहता है, कभी रुकता नहीं। इसी कारण लेखक ने उसे जीवन के निरंतर और अनंत प्रवाह का चिह्न माना है।

अंतिम उत्तर:
झरने को 'जीवन की अनन्तता' का प्रतीक कहा गया है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* जीवन की अनन्तता का प्रतीक ..... वह झरना उन अद्‌भुत ....., अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ कि जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सीमाओं से दूर बहती धारा में बहने लगा हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गईं। मन हुआ कि ऐसे ही अनन्त समय तक बहता रहूँ ..... सुनता रहूँ झरने की पुकार को।

(ii) प्रकृति के उस अनन्त स्वरूप को देखकर लेखक को कैसी अनुभूति होती है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर अनुभूति:
प्रकृति के अनन्त रूप, यानी झरने की धारा को देखकर लेखक को जीवन की शक्ति का अहसास होता है। उसे लगता है कि वह स्वयं भी देश और काल की सीमाओं से दूर बहती धारा के साथ बह रहा है।

चरण 2: मन की स्थिति:
उसके भीतर की बुराइयाँ और वासनाएँ धुल जाती हैं। उसे शांति और पवित्रता का अनुभव होता है, और वह चाहता है कि अनन्त समय तक झरने की पुकार सुनता रहे।

निष्कर्ष:
लेखक को नई शक्ति, शांति, पवित्रता और आनंद की अनुभूति होती है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* जीवन की अनन्तता का प्रतीक ..... वह झरना उन अद्‌भुत ....., अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ कि जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सीमाओं से दूर बहती धारा में बहने लगा हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गईं। मन हुआ कि ऐसे ही अनन्त समय तक बहता रहूँ ..... सुनता रहूँ झरने की पुकार को।

(iii) रेखांकित अंश का भाव स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:
तामसिकता = अज्ञान, आलस्य, क्रोध जैसी नीच प्रवृत्तियाँ।
दुष्ट वासनाएँ = बुरी इच्छाएँ और विकार।
निर्मल = स्वच्छ और पवित्र।

चरण 2: भावार्थ:
झरने की स्वच्छ धारा को देखते और उसकी पुकार सुनते हुए लेखक का मन इतना

पवित्र हो गया कि उसके भीतर के सारे बुरे भाव जैसे उसी धारा के साथ बह गए।

चरण 3: टिप्पणी:
प्रकृति का सान्निध्य मनुष्य के मन को शुद्ध करता है और उसे बुराइयों से मुक्त करके शांति देता है।

निष्कर्ष:
रेखांकित अंश का आशय है कि प्रकृति की निर्मल धारा ने लेखक की सभी बुरी प्रवृत्तियाँ धो डालीं।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: भवन - भुवन

(A) जगत - निर्जन

(B) घर - संसार

(C) ग्रह - गृह

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (B) घर - संसार

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
भवन का अर्थ है घर या मकान।
भुवन का अर्थ है संसार, लोक या जगत।
युग्म भवन-भुवन का सही अर्थ इसलिए घर-संसार है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) जगत - निर्जन: जगत भुवन का अर्थ है, पर वह पहले स्थान पर आया है, और भवन का अर्थ निर्जन नहीं है। गलत।
(B) घर - संसार: भवन = घर, भुवन = संसार। सही।
(C) ग्रह - गृह: यह एक अलग शब्द-युग्म है, भवन-भुवन का अर्थ नहीं। गलत।

(D) इनमें से कोई नहीं: सही विकल्प उपलब्ध है, इसलिए यह गलत है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) घर - संसार।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: अम्ब - अम्बु

(A) माता - पानी

(B) जल - जननी

(C) जलद - नीरज

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (A) माता - पानी

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
अम्ब का अर्थ है माता, माँ। जैसे: जगदम्बा का अर्थ जगत की माता।
अम्बु का अर्थ है जल, पानी। जैसे: अम्बुज का अर्थ जल में उत्पन्न कमल।
अतः अम्ब - अम्बु का अर्थ-युग्म माता - पानी है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) माता - पानी: अम्ब = माता, अम्बु = पानी। सही।
(B) जल - जननी: अर्थ ठीक हैं, पर क्रम उलटा है। गलत।
(C) जलद - नीरज: जलद का अर्थ बादल और नीरज का अर्थ कमल है। ये अम्ब-अम्बु के अर्थ नहीं हैं। गलत।
(D) इनमें से कोई नहीं: सही विकल्प (A) है, अतः गलत।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) माता - पानी।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **अनल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'अनल' शब्द का सबसे प्रसिद्ध अर्थ आग है, पर इसके और भी अर्थ हैं। प्रश्न में दो अर्थ माँगे गए हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. अनल = अग्नि या आग।
2. अनल = पित्त या पाचन-शक्ति, यानी शरीर की जठराग्नि।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
अनल (आग) - सूखे जंगल में अनल तेजी से फैल गई।
अनल (पाचन-शक्ति) - योग करने से अनल प्रबल रहती है और भोजन ठीक से पचता है।

अंतिम उत्तर:
'अनल' के दो अर्थ हैं: (1) अग्नि, (2) पित्त या पाचन-शक्ति।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **विधि**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'विधि' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। यहाँ इसके दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. विधि = तरीका, ढंग या प्रणाली।
2. विधि = भाग्य या प्रारब्ध।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
विधि (तरीका) - इस प्रयोग की विधि बहुत सरल है।
विधि (भाग्य) - विधि के आगे किसी का वश नहीं चलता।

अंतिम उत्तर:
'विधि' के दो अर्थ हैं: (1) तरीका, (2) भाग्य।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **नीरज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'नीरज' शब्द नीर (जल) और ज (उत्पन्न) से बना है। जल में पैदा होने वाली वस्तुओं के लिए यह शब्द आता है।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. नीरज = कमल, जो जल में खिलता है।
2. नीरज = मोती, जो सीप में, यानी जल में बनता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
नीरज (कमल) - सरोवर में नीरज खिलकर शोभा बढ़ा रहे थे।
नीरज (मोती) - माला में पिरोया हुआ नीरज बहुत चमक रहा था।

अंतिम उत्तर:
'नीरज' के दो अर्थ हैं: (1) कमल, (2) मोती।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **सुरभि**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'सुरभि' शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं। इनमें से दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. सुरभि = सुगन्ध या खुशबू।
2. सुरभि = गाय, विशेषकर कामधेनु।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
सुरभि (सुगन्ध) - बगीचे में फूलों की सुरभि चारों ओर फैल गई।
सुरभि (गाय) - ऋषि के आश्रम में सुरभि की सेवा होती थी।

अंतिम उत्तर:
'सुरभि' के दो अर्थ हैं: (1) सुगन्ध, (2) गाय या कामधेनु।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द चुनकर लिखिए: कम बोलने वाला
-

(A) वाचाल

(B) बहुभाषी

(C) मितभाषी

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (C) मितभाषी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'कम बोलने वाला' के लिए सही शब्द चुनना है। इसका भाव संयमित और थोड़ा बोलना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) वाचाल: बहुत बोलने वाला। यह उलटा अर्थ है, इसलिए गलत।
(B) बहुभाषी: बहुत भाषाएँ जानने या बहुत बोलने वाला। यह भी सही नहीं है।
(C) मितभाषी: मित (थोड़ा) + भाषी (बोलने वाला)। यही सही है।
(D) इनमें से कोई नहीं: जब (C) सही है तो यह विकल्प गलत हो जाता है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) मितभाषी

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द चुनकर लिखिए: जिसका कोई रक्षक न हो -

(A) अनभिज्ञ

(B) अनाथ

(C) सनाथ

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (B) अनाथ

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'जिसका कोई रक्षक न हो' के लिए एक शब्द चुनना है। जिसका कोई स्वामी, संरक्षक या सहारा न हो, उसके लिए विशेष शब्द है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) अनभिज्ञ: जो जानकारी न रखता हो, अनजान। यह रक्षक से संबंधित नहीं है।
(B) अनाथ: अ (नहीं) + नाथ (स्वामी या रक्षक)। जिसका कोई नाथ न हो, वह अनाथ है। यही सही है।
(C) सनाथ: स (सहित) + नाथ। जिसके पास रक्षक या स्वामी हो। यह उलटा अर्थ है।
(D) इनमें से कोई नहीं: सही उत्तर विकल्प (B) में है, इसलिए यह गलत है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) अनाथ

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: यह पुस्तक देवेश ने लिखा।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: यह पुस्तक देवेश ने लिखा।
दोष क्रिया 'लिखा' के लिंग में है।

चरण 2: नियम:
भूतकाल के सकर्मक वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' लगता है। तब क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं, कर्म के लिंग और वचन के अनुसार बदलती है। यहाँ कर्म 'पुस्तक' स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया 'लिखी' होगी।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
यह पुस्तक देवेश ने लिखी।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: यह पुस्तक देवेश ने लिखी। (अशुद्धि: लिंग, 'लिखा' की जगह 'लिखी'।)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: आज मेरा बड़ा भाई आ गया।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: वाक्य की जाँच:
वाक्य: आज मेरा बड़ा भाई आ गया।
बड़े भाई के लिए हिन्दी में आदर का भाव रखा जाता है। आदर दिखाने के लिए एक व्यक्ति के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है।

चरण 2: नियम (आदरार्थ बहुवचन):
बड़े भाई, पिताजी, गुरुजी जैसे आदरणीय व्यक्तियों के लिए विशेषण और क्रिया बहुवचन में आते हैं। इसलिए 'मेरा' का 'मेरे', 'बड़ा' का 'बड़े' और 'आ गया' का 'आ गए' होगा।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
आज मेरे बड़े भाई आ गए।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: आज मेरे बड़े भाई आ गए। (अशुद्धि: आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग नहीं हुआ।)

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: मैं अभी अभी खाना खाने को बैठा।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: मैं अभी अभी खाना खाने को बैठा।
इसमें दो दोष हैं: पहला, 'खाने को बैठा' में 'को' का अनावश्यक प्रयोग है। दूसरा, दोहराए गए शब्द 'अभी अभी' के बीच योजक चिह्न (-) नहीं है।

चरण 2: नियम:
'बैठना' जैसी क्रिया के साथ उद्देश्य बताने के लिए 'खाने' रूप ही लगता है, 'को' नहीं। साथ ही पुनरुक्त शब्दों (अभी-अभी, धीरे-धीरे) के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
मैं अभी-अभी खाना खाने बैठा हूँ।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: मैं अभी-अभी खाना खाने बैठा हूँ। (अशुद्धि: 'को' का अनावश्यक प्रयोग और 'अभी-अभी' में योजक चिह्न की कमी।)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: उपरोक्त कथन सही है।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: उपरोक्त कथन सही है।
अशुद्धि शब्द 'उपरोक्त' में है। यह वर्तनी और सन्धि की अशुद्धि है।

चरण 2: सही शब्द और सन्धि:
शुद्ध शब्द 'उपर्युक्त' है। यह उपरि + उक्त से बना है। यहाँ यण सन्धि होती है: इ + उ में 'इ' का 'य्' हो जाता है, इसलिए उपर् + य् + उक्त = उपर्युक्त। 'उपरोक्त' इस नियम के अनुसार नहीं बनता।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
उपर्युक्त कथन सही है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: उपर्युक्त कथन सही है। (अशुद्धि: 'उपरोक्त' की जगह 'उपर्युक्त'।)

12(a). 'वीर' अथवा 'शान्तरस' का लक्षणसहित एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: उत्तर का चयन:
प्रश्न में 'वीर अथवा शान्त' है। इस पृष्ठ पर पहला रस, वीर रस, समझाया गया है।

चरण 2: लक्षण:
पराक्रम, साहस या त्याग की कथा से मन में उत्साह जागता है। यह उत्साह जब आलंबन, उद्दीपन, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होता है, तब वीर रस होता है। स्थायी भाव उत्साह है।

चरण 3: उदाहरण:
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

चरण 4: उदाहरण में वीर रस:
सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता की इन पंक्तियों में रानी लक्ष्मीबाई की बहादुरी का गान है। रानी आलंबन हैं और अंग्रेजों से उनका युद्ध उद्दीपन है। उनकी वीरता की चर्चा अनुभाव है। गर्व, स्मृति और औत्सुक्य संचारी भाव हैं। इनसे उत्साह स्थायी भाव पुष्ट होता है।

अंतिम उत्तर:
इन पंक्तियों में वीर रस है।

12(b). 'श्लेष' अथवा 'उत्प्रेक्षा' अलंकार का लक्षणसहित एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में श्लेष अथवा उत्प्रेक्षा में से किसी एक को लक्षण सहित समझाना है। यहाँ पहला अलंकार 'श्लेष' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
जब काव्य में कोई शब्द केवल एक बार प्रयुक्त हो, पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलें, तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है। श्लेष का अर्थ ही है चिपका हुआ, यानी एक शब्द से कई अर्थ चिपके रहते हैं।

चरण 3: उदाहरण:
रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून॥

चरण 4: स्पष्टीकरण:

यहाँ 'पानी' शब्द तीन अर्थों में आया है। मोती के लिए पानी का अर्थ चमक है, मनुष्य के लिए इज्जत या प्रतिष्ठा है और चूने के लिए जल है। एक ही शब्द से तीन अर्थ निकलते हैं, इसलिए श्लेष अलंकार है।

अंतिम उत्तर:
जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। उदाहरण: रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

12(c). 'दोहा' अथवा 'कुण्डलिया' छन्द का लक्षणसहित एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में दोहा अथवा कुण्डलिया छन्द का लक्षण सहित एक उदाहरण लिखना है। यहाँ पहला छन्द 'दोहा' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें दो पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में दो चरण होते हैं। विषम चरणों में 13 और सम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में गुरु-लघु आता है और तुक भी मिलती है।

चरण 3: उदाहरण (कबीरदास):
साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जाय॥

चरण 4: जाँच:
'साईं इतना दीजिए' में 13 मात्राएँ हैं और 'जा में कुटुम समाय' में 11 मात्राएँ हैं। सम चरणों के अंत में 'समाय' और 'जाय' आए हैं, जिनकी तुक मिलती है और अंत गुरु-लघु है।

अंतिम उत्तर:
दोहा में क्रम से 13 और 11 मात्राएँ होती हैं। यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है।

13. दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर संबंधित कालेज में लिपिक के पद पर अपनी नियुक्ति हेतु प्रबन्धक को आवेदन पत्र लिखिए, जिसमें अपनी शैक्षिक योग्यता का भी उल्लेख हो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पत्र का स्वरूप:
यह एक आवेदन पत्र है, जो किसी कालेज के प्रबन्धक को लिखा जाना है। पत्र में यह बताना होगा कि विज्ञापन किस समाचार पत्र में और किस तिथि को देखा। साथ ही अपनी शैक्षिक योग्यता लिखनी है।

चरण 2: आवेदन पत्र:
प्रेषक:
क ख ग,
मोहल्ला: गाँधीनगर,
नगर: रामपुर (उत्तर प्रदेश)।

दिनांक: 5 अप्रैल, 2026

सेवा में,
श्रीमान प्रबन्धक महोदय,
आदर्श इण्टर कालेज,
रामपुर।

विषय: लिपिक के पद हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,
दिनांक 3 अप्रैल, 2026 के दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन से मुझे ज्ञात हुआ कि आपके कालेज में लिपिक का एक पद रिक्त है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरी शैक्षिक योग्यता इस प्रकार है: मैंने हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। इसके बाद मैंने स्नातक (बी.ए.) की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की है। मैंने कंप्यूटर का छह माह का प्रशिक्षण भी लिया है और हिन्दी तथा अंग्रेजी टंकण में मेरी गति अच्छी है।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपना कार्य पूरी लगन, ईमानदारी और समय की पाबंदी के साथ करूँगा। मेरे सभी प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ इस पत्र के साथ संलग्न हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे इस पद पर सेवा का अवसर प्रदान करने की कृपा करें। मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

भवदीय,
क ख ग
संलग्नक: शैक्षिक प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ

निष्कर्ष:
पत्र में विज्ञापन का संदर्भ, पद का नाम, शैक्षिक योग्यता और नियुक्ति की प्रार्थना, चारों आवश्यक बातें क्रम से लिखी गई हैं।

OR

बैंक के शाखा प्रबन्धक के नाम एक आवेदन पत्र लिखिए, जिसमें किसी व्यवसाय को स्थापित करने हेतु ऋण की माँग की गई हो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पत्र को समझें:
यह बैंक के शाखा प्रबन्धक को लिखा जाने वाला आवेदन पत्र है। इसमें व्यवसाय का नाम, उसके लिए आवश्यक राशि, ऋण चुकाने का तरीका और जमानत का उल्लेख होना चाहिए।

चरण 2: आवेदन पत्र:
प्रेषक:
क ख ग,
25, सुभाष नगर,
नगर: मधुपुर (उत्तर प्रदेश)।

दिनांक: 20 जनवरी, 2026

सेवा में,
शाखा प्रबन्धक महोदय,
स्टेट बैंक की मुख्य शाखा,
मधुपुर।

विषय: व्यवसाय स्थापित करने हेतु ऋण के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,
मैं एक शिक्षित बेरोजगार युवक हूँ। मैं अपने नगर में कपड़ों की एक दुकान खोलना चाहता हूँ। इस कार्य के लिए मेरे पास केवल एक लाख रुपये की पूँजी है, जबकि इस व्यवसाय में कुल चार लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

अतः मैं आपके बैंक से तीन लाख रुपये का ऋण चाहता हूँ। मैं यह ऋण आसान मासिक किस्तों में ब्याज सहित पाँच वर्ष के भीतर चुका दूँगा। बैंक की सभी शर्तें मुझे मान्य होंगी। जमानत के रूप में मैं अपने मकान के कागजात प्रस्तुत करने को तैयार हूँ।

मैंने व्यवसाय की पूरी योजना, पहचान पत्र, निवास प्रमाण पत्र और शैक्षिक प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ इस आवेदन के साथ संलग्न की हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मेरा ऋण शीघ्र स्वीकृत करने की कृपा करें। इससे मुझे स्वरोजगार का अवसर मिलेगा।

भवदीय,
क ख ग

निष्कर्ष:
पत्र में व्यवसाय, ऋण की राशि, चुकाने की अवधि और जमानत, चारों मुख्य बातें दी गई हैं। यही ऋण आवेदन पत्र का सही रूप है।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा शैली में निबंध लिखिए:
पर्यावरण-संरक्षण

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण का अर्थ
3. प्रदूषण के प्रकार और कारण
4. प्रदूषण के दुष्परिणाम
5. संरक्षण के उपाय
6. सरकारी और जन-प्रयास
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: पर्यावरण-संरक्षण:

प्रस्तावना: हवा, पानी, मिट्टी, वन और जीव-जन्तु मिलकर हमारा पर्यावरण बनाते हैं। यह प्रकृति का अनमोल उपहार है, जिस पर हमारा पूरा जीवन टिका है। किन्तु मनुष्य की भौतिक इच्छाओं ने इसे गंभीर संकट में डाल दिया है। इसलिए आज पर्यावरण-संरक्षण सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

पर्यावरण का अर्थ: पर्यावरण शब्द परि और आवरण से बना है। इसका अर्थ है, हमें चारों ओर से घेरने वाला आवरण। इसमें जल, वायु, भूमि, वनस्पति और सभी प्राणी सम्मिलित हैं।

प्रदूषण के प्रकार और कारण: वायु प्रदूषण कारखानों और वाहनों के धुएँ से होता है। जल प्रदूषण नदियों में कचरा, सीवर और रासायनिक अपशिष्ट बहाने से फैलता है। हॉर्न और लाउडस्पीकर से ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है। रासायनिक खाद, कीटनाशक और प्लास्टिक से मृदा प्रदूषण होता है। इन सबके मूल कारण हैं जनसंख्या वृद्धि, तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण और वनों की अंधाधुंध कटाई।

दुष्परिणाम: प्रदूषित वायु से दमा, कैंसर और हृदय के रोग बढ़ रहे हैं। दूषित जल से हैजा, पीलिया और पेट के रोग फैलते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल-स्तर बढ़ रहा है और मौसम अनियमित हो गया है। ओज़ोन परत के क्षीण होने से पराबैंगनी किरणें त्वचा के रोग बढ़ाती हैं।

संरक्षण के उपाय: अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जाएँ और वनों की कटाई रोकी जाए। कारखानों में धुआँ और गंदा पानी शोधित करने के संयंत्र लगें। प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े और जूट के थैले उपयोग में लाए जाएँ। सौर तथा पवन ऊर्जा को बढ़ावा मिले और सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग हो। जल की बचत की जाए और कचरे का पुनर्चक्रण किया जाए।

सरकारी और जन-प्रयास: भारत में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में बना। प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। नमामि गंगे और स्वच्छ भारत जैसे अभियान चल रहे हैं। चिपको आन्दोलन जैसे जन-प्रयासों ने भी लोगों में चेतना जगाई।

उपसंहार: पर्यावरण की रक्षा केवल सरकार का कार्य नहीं है, यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि हम आज प्रकृति का सम्मान नहीं करेंगे, तो भविष्य में जीवन कठिन हो जाएगा। हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितना आवश्यक हो और उसे सुरक्षित रखकर आगे की पीढ़ी को सौंपना चाहिए।

निष्कर्ष:
स्वच्छ पर्यावरण ही स्वस्थ और सुखी जीवन की नींव है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा शैली में निबंध लिखिए:
आतंकवाद की समस्या और समाधान

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. आतंकवाद का अर्थ
3. आतंकवाद के कारण
4. भारत और विश्व में आतंकवाद
5. आतंकवाद के दुष्परिणाम
6. समस्या के समाधान
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: आतंकवाद की समस्या और समाधान:
प्रस्तावना: आज विश्व जिन गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, उनमें आतंकवाद सबसे भयानक है। यह मानवता का शत्रु है, जो निर्दोष लोगों के प्राण लेकर समाज में भय फैलाता है। भारत भी दशकों से इस समस्या से पीड़ित है।
आतंकवाद का अर्थ: अपने राजनीतिक, धार्मिक या अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा और भय का सहारा लेना आतंकवाद कहलाता है। आतंकवादी बम-विस्फोट, अपहरण, गोलीबारी और हत्या जैसे कार्यों से समाज और सरकार को झुकाना चाहते हैं।
आतंकवाद के कारण: धार्मिक कट्टरता और संकीर्ण सोच इसका प्रमुख कारण है। अशिक्षा, गरीबी और बेरोज़गारी के कारण युवा बहकावे में आ जाते हैं। कुछ देश अपने स्वार्थ के लिए आतंकवादियों को धन, हथियार और प्रशिक्षण देते हैं। राजनीतिक स्वार्थ और सीमाओं की कमज़ोर सुरक्षा भी इसे बढ़ावा देती है।

भारत और विश्व में आतंकवाद: भारत में जम्मू-कश्मीर और पंजाब लंबे समय तक इससे प्रभावित रहे। सन् 2001 में संसद पर हमला, सन् 2008 में मुंबई का हमला और सन् 2019 में पुलवामा की घटना इसके उदाहरण हैं। विश्व में सन् 2001 में अमेरिका पर हुआ हमला इसका बड़ा प्रमाण है। अब यह किसी एक देश की नहीं, पूरे विश्व की समस्या है।

दुष्परिणाम: आतंकवाद से हजारों निर्दोष लोग मारे जाते हैं और परिवार उजड़ जाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था को भारी हानि होती है, क्योंकि सुरक्षा पर अधिक धन खर्च करना पड़ता है। पर्यटन और उद्योग-धंधे चौपट हो जाते हैं। समाज में भय, अविश्वास और सांप्रदायिक तनाव फैलता है।

समस्या के समाधान: आतंकवाद को रोकने के लिए कठोर कानून बनाकर आतंकियों को शीघ्र और कड़ा दंड दिया जाए। खुफिया तंत्र और सुरक्षा बलों को आधुनिक हथियारों से सुसज्जित किया जाए। सीमाओं की निगरानी कड़ी हो। युवाओं को अच्छी शिक्षा और रोज़गार दिया जाए ताकि वे भटकें नहीं। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और भाईचारे की भावना बढ़ाई जाए। आतंक को बढ़ावा देने वाले देशों पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाया जाए। नागरिक भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना पुलिस को दें।

उपसंहार: आतंकवाद का सामना केवल सरकार अकेले नहीं कर सकती। इसके लिए जनता, प्रशासन और विश्व के सभी देशों को मिलकर काम करना होगा। जब हम एकता और शांति के मार्ग पर चलेंगे, तभी यह दानव पराजित होगा और मानवता सुरक्षित रहेगी।

निष्कर्ष:

शिक्षा, एकता, कठोर कानून और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से ही आतंकवाद का अंत संभव है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा शैली में निबंध लिखिए:

अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. अन्तरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत
3. प्रमुख उपलब्धियाँ
4. अन्तरिक्ष अनुसंधान से जीवन में लाभ
5. भावी योजनाएँ और चुनौतियाँ
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम:

प्रस्तावना

प्राचीन काल से मनुष्य आकाश के तारों, ग्रहों और चन्द्रमा को देखकर आश्चर्य करता आया है। आज विज्ञान ने उसकी इस जिज्ञासा को अन्तरिक्ष यात्रा में बदल दिया है। कभी साइकिल और बैलगाड़ी पर रॉकेट के पुर्जे ले जाने वाला भारत आज चन्द्रमा और मंगल तक अपने यान भेज चुका है। अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम पूरे देश के लिए गर्व का विषय हैं।

अन्तरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत

भारत में अन्तरिक्ष अनुसंधान की नींव डॉ. विक्रम साराभाई ने रखी। उन्हीं के प्रयासों से 1969 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना हुई। 1975 में भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' अन्तरिक्ष में भेजा गया। 1984 में राकेश शर्मा अन्तरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय बने। इसके बाद भारत ने पीएसएलवी और जीएसएलवी जैसे अपने शक्तिशाली रॉकेट बनाए।

प्रमुख उपलब्धियाँ

2008 में चन्द्रयान-1 ने चन्द्रमा की कक्षा से उसका अध्ययन किया और वहाँ जल के अणुओं की खोज में सहायता की। 2014 में मंगलयान पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँच गया। ऐसा करने वाला भारत पहला देश बना, और वह भी बहुत कम खर्च में। 2017 में इसरो ने एक ही रॉकेट से 104 उपग्रह छोड़कर उस समय का विश्व कीर्तिमान बनाया। 23 अगस्त 2023 को चन्द्रयान-3 का विक्रम लैंडर चन्द्रमा के

दक्षिणी ध्रुव के पास उतरा और भारत ऐसा करने वाला पहला देश बना। इसके बाद सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य एल-1 यान भेजा गया।

अन्तरिक्ष अनुसंधान से लाभ

उपग्रहों की सहायता से मौसम की सही जानकारी और चक्रवात की चेतावनी मिलती है। दूरसंचार, दूरदर्शन, इंटरनेट और मानचित्र सेवाएँ इन्हीं पर निर्भर हैं। किसानों को फसल और भूमि की जानकारी मिलती है तथा बाढ़ और सूखे जैसी आपदाओं में राहत कार्य आसान होता है। भारत अपनी दिशा-सूचक प्रणाली 'नाविक' भी चलाता है। दूसरे देशों के उपग्रह छोड़ने से देश को विदेशी मुद्रा भी मिलती है।

भावी योजनाएँ और चुनौतियाँ

भारत अब गगनयान योजना के अन्तर्गत अपने अन्तरिक्ष यात्रियों को अपने यान से अन्तरिक्ष भेजने और भविष्य में अपना अन्तरिक्ष स्टेशन बनाने की तैयारी में है। इसमें निजी कम्पनियों की भागीदारी भी बढ़ रही है। सीमित बजट, अन्तरिक्ष में बढ़ता कचरा और दूसरे देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा बड़ी चुनौतियाँ हैं।

उपसंहार

कम साधनों में बड़ी सफलताएँ पाकर भारत ने सिद्ध कर दिया है कि दृढ़ संकल्प और वैज्ञानिक लगन से कोई भी लक्ष्य दूर नहीं। आवश्यकता है कि नई पीढ़ी विज्ञान को अपनाए और अन्तरिक्ष में भारत का तिरंगा और ऊँचा उठाए।

निष्कर्ष:

इसरो की सफलताएँ देश की वैज्ञानिक शक्ति का प्रमाण हैं और अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा शैली में निबंध लिखिए:
वृक्षारोपण एवं वन-संरक्षण

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. वनों का महत्त्व
3. वनों के कटने के कारण और दुष्परिणाम
4. वृक्षारोपण और वन-संरक्षण के उपाय
5. सरकार और समाज के प्रयास
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, वृक्षारोपण एवं वन-संरक्षण:

प्रस्तावना

वृक्ष धरती के आभूषण और मानव के सबसे सच्चे मित्र हैं। प्राचीन भारत में वनों को पूजनीय माना जाता था और ऋषि-मुनि वनों में ही साधना करते थे। आज बढ़ती जनसंख्या, उद्योग और शहरों के विस्तार ने वनों को संकट में डाल दिया है। ऐसे में वृक्षारोपण और वन-संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है।

वनों का महत्त्व

वृक्ष हमें प्राणवायु ऑक्सीजन देते हैं और वायु की हानिकारक गैस कार्बन डाइऑक्साइड को सोख लेते हैं। वे वर्षा कराने में सहायक हैं और मिट्टी को बहने से रोकते हैं। वनों से हमें लकड़ी, फल, औषधियाँ, गोंद और जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं। वन असंख्य पशु-पक्षियों का घर हैं और जैव-विविधता को बचाए रखते हैं।

वनों के कटने के कारण और दुष्परिणाम

खेती, सड़क, कारखाने और मकान के लिए वनों को अन्धाधुन्ध काटा गया। लकड़ी की तस्करी और जंगलों में लगने वाली आग ने भी हानि पहुँचाई। इसके परिणामस्वरूप धरती का तापमान बढ़ रहा है, वर्षा अनियमित हो गई है, बाढ़ और भूस्खलन बढ़े हैं तथा अनेक जीव-जन्तु समाप्त होने की कगार पर हैं। शहरों में वायु प्रदूषण भी बहुत बढ़ गया है।

वृक्षारोपण और वन-संरक्षण के उपाय

हर व्यक्ति को अपने जन्मदिन और शुभ अवसरों पर कम से कम एक पौधा लगाना चाहिए और उसकी देखभाल भी करनी चाहिए। सड़कों, नदियों और खाली भूमि के किनारे पेड़ लगाए जाएँ। कटे हुए पेड़ के बदले नए पेड़ लगाना अनिवार्य हो। लकड़ी की जगह अन्य वस्तुओं का उपयोग बढ़ाया जाए और जंगलों में आग रोकने के प्रबन्ध किए जाएँ।

सरकार और समाज के प्रयास

हमारे देश में हर वर्ष जुलाई के पहले सप्ताह में 'वन महोत्सव' मनाया जाता है। राष्ट्रीय वन नीति में देश के एक तिहाई भू-भाग को वनों से ढकने का लक्ष्य रखा गया है। सुन्दरलाल बहुगुणा और गौरा देवी जैसे लोगों का 'चिपको आन्दोलन' वनों की रक्षा का अनुपम उदाहरण है, जिसमें लोग पेड़ों से लिपट गए थे। स्कूलों और सामाजिक संस्थाओं की भी बड़ी भूमिका है।

उपसंहार

वन हैं तो जल है, जल है तो जीवन है। यदि हमने आज वृक्ष नहीं लगाए और वनों को नहीं बचाया, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा और पानी भी नहीं मिलेगा। इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम पेड़ लगाएँगे, उन्हें बचाएँगे और धरती को हरा-भरा बनाएँगे।

निष्कर्ष:

वृक्षारोपण और वन-संरक्षण मानव-जीवन की रक्षा का ही दूसरा नाम है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा शैली में निबंध लिखिए: **साहित्य और समाज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना

2. साहित्य का अर्थ
3. साहित्य पर समाज का प्रभाव
4. समाज पर साहित्य का प्रभाव
5. साहित्यकार का दायित्व
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, साहित्य और समाज:

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और साहित्य उसकी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति है। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। जिस प्रकार दर्पण में हमारा रूप दिखाई देता है, उसी प्रकार साहित्य में अपने समय के समाज का चित्र दिखाई देता है। साहित्य और समाज का सम्बन्ध अटूट है।

साहित्य का अर्थ

साहित्य शब्द 'सहित' से बना है, जिसका अर्थ है साथ या हित के साथ। इस प्रकार जिस रचना में समाज का हित छिपा हो, वही सच्चा साहित्य है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबन्ध इसके प्रमुख रूप हैं।

साहित्य पर समाज का प्रभाव

साहित्यकार समाज में रहकर ही लिखता है, इसलिए उसकी रचनाओं में समाज की परिस्थितियाँ झलकती हैं। भक्ति काल में जब देश पर विदेशी शासन और सामाजिक भेदभाव था, तब कबीर और तुलसी जैसे सन्तों ने भक्ति के द्वारा जनता को सहारा दिया। रीतिकाल में दरबारी वातावरण के कारण शृंगारिक रचनाएँ अधिक लिखी गईं। आधुनिक काल में स्वतन्त्रता संग्राम की भावना साहित्य में गूँजने लगी।

समाज पर साहित्य का प्रभाव

साहित्य समाज को दिशा भी देता है। कबीर ने अपनी वाणी से पाखण्ड और जाति-भेद का विरोध किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने देश की दुर्दशा दिखाकर लोगों को जगाया। मैथिलीशरण गुप्त और माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं ने स्वतन्त्रता की भावना जगाई। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में किसानों और गरीबों की पीड़ा दिखाकर समाज का ध्यान उनकी ओर खींचा। इस प्रकार साहित्य समाज-सुधार का

सशक्त साधन है।

साहित्यकार का दायित्व
साहित्यकार को समाज की अच्छाइयों के साथ बुराइयों को भी दिखाना चाहिए। उसकी रचना में सत्य, सदाचार और मानवता का सन्देश होना चाहिए। केवल मनोरंजन या धन के लिए लिखा गया साहित्य समाज को भटका सकता है।

उपसंहार
साहित्य और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज साहित्य को विषय देता है और साहित्य समाज को दिशा देता है। स्वस्थ समाज के लिए उत्तम साहित्य की रचना और उसका अध्ययन दोनों आवश्यक हैं।

निष्कर्ष:
साहित्य वही श्रेष्ठ है जो समाज का सच्चा चित्र भी दिखाए और उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दे।